Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

पंडित दीन दयाल उपाध्याय और आत्म निर्भर भारत

सुशील कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, बी. बी. डी. पी. जी. कॉलेज, परुइया आश्रम, अंबेडकर नगर (उ.प्र.)

Article Info

Article History
Received : 03 Aug 2024
Published : 16 Aug 2024

Publication Issue :
July-August-2024
Volume 7, Issue 4

Page Number : 119-123

सारांश - प्रस्तुत शोध पत्र आत्म निर्भर भारत अभियान कार्यक्रम पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की अमिट छाप का विशद विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय भारतीय जन संघ के संस्थापक सदस्य, प्रतिष्ठित राष्ट्रवादी राजनीतिक चिंतक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री एवं भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के पोषक थे। वह एक महान विचारक थे जो गरीबों के कल्याण, उत्पादन और आर्थिक गतिविधियों में स्थानीय भागीदारी को लेकर प्रयासरत रहते थे। उनका मानना था कि समाजवादी और पूंजीवादी दोनों व्यवस्थाएं व्यक्ति के एकांकी विकास से संबंधित है जबकि व्यक्ति की समग्र जरूरतों का विकास किए बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नहीं हो सकता। उन्होंने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए एकात्म अर्थ नीति का प्रतिपादन किया जिसका आशय ऐसी अर्थनीति से है जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित न रहकर जीवन को समृद्ध और सुखी बनाने हेतु समग्र पहलुओं पर ध्यान देती है। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता और उसके उसके आत्मसम्मान की रक्षा के लिए उसका आत्मनिर्भर होना आवश्यक है।हाल में भारत सरकार द्वारा प्रारंभ कार्यक्रमों जैसे स्टार्ट अप, स्टैंडअप, दीन दयाल अंत्योदय कार्यक्रम, मेक इन इंडिया, मुद्रा योजना और आत्मनिर्भर भारत अभियान इत्यादि के माध्यम से आम भारतीय को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। ये सभी कार्यक्रम पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचारों से ओत-प्रोत नजर आते हैं।

कुंजी शब्द - एकात्म अर्थ नीति, स्टार्टअप, स्टैंडअप।

प्रस्तावना - पंडित दीन दयाल उपाध्याय एक महान दार्शनिक,अर्थशास्त्री, भारतीय जन संघ के संस्थापक सदस्य, उच्च कोटि के विचारक और भारतीय राजनीतिक और आर्थिक चिंतन को वैचारिक दिशा देने वाले पुरोधा थे। विभिन्न विद्वानों ने आर्थिक विकास को लेकर अपने अपने विचार व्यक्त किए हैं। दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार भारतीय संस्कृति और दर्शन के अनुरुप होने के कारण वास्तविकता पर अवलंबित हैं।उन्होंने पूंजीवाद और समाजवादी व्यवस्था को भारत के विकास के अनुकूल न मानते हुए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए एकात्म अर्थनीति का प्रतिपादन किया। इसका

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

आशय ऐसी अर्थनीति से है जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण तक सीमित न रहकर जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए समग्र पहलुओं पर गौर करने की बात करती है।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार – पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए एकात्म मानव वाद पर आधारित एकात्म अर्थनीति का प्रतिपादनकिया।उन्होंने अर्थनीति की विवेचना करते हुए कहा कि "अर्थ या संपत्ति के अभाव और प्रभाव दोनों से सामान्य जीवन को मुक्त रखकर सामाजिक अर्थव्यवस्था में संपत्ति के विषय में एक योग्य व्यवस्था का निर्माण करने को भारतीय संस्कृति में अर्थायाम कहा गया है।"(उपाध्याय : विचार दर्शन)। अर्थनीति के मामले में पाश्चात्य के अंधानुकरण को वे सही नहीं मानते थे। इस विषय में उनका स्पष्ट मानना था कि हमें अपनी 'अर्थनीति का भारतीयकरण' करना होगा। पंडित उपाध्याय का मत है कि "जिस प्रकार व्यक्ति को स्वस्थ रखने हेतु प्राणायाम आवश्यक है, उसी प्रकार देश की अर्थव्यवस्था हेतु अर्थायाम आवश्यक है।"उनका मानना था कि किसी भी देश का आर्थिक विकास तभी संभव है जब हम विकास के सबसे निचले पायदान पर स्थित व्यक्ति को ऊपर उठा सकें। उनके अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था मनुष्य को अर्थलोलुप बना देती है। (उपाध्याय, 1958, पृ०90) दूसरी तरफ मार्क्स की साम्यवादी व्यवस्था ने मनुष्य को रोटीमय बना दिया है। ये दोनों ही व्यवस्थाएं व्यक्ति के लोकतांत्रिक अधिकार और उसके स्वस्थ विकास के प्रतिकूल हैं। पंडित उपाध्याय जी लोकतंत्र को केवल राजनीतिक जीवन का आयाम नहीं मानते बल्कि उनका मानना है कि 'प्रत्येक को वोट' जिस प्रकार राजनीतिक लोकतंत्र का निष्कर्ष है उसी प्रकार 'प्रत्येक को काम' आर्थिक लोकतंत्र का मानक है। इसीलिए उनका स्पष्ट मानना था कि हर एक को काम का अधिकार मिलना चाहिए और इस हेतु उनका जोर अर्थव्यवस्था को स्वदेशी, स्वावलंबी, और विकेंद्रित बनाने पर था। उनका मानना था कि विदेशी पूंजी के बल पर देश का औद्योगीकरण नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि "विदेशी पूंजी के राजनैतिक के साथ आर्थिक प्रभाव भी कष्टकारी होते हैं। विदेशी निवेश स्वदेशी श्रम का शोषण करता है और जो हमारे यहां पश्चिमी प्रकार के शोषणकारी पूंजीवाद को जन्म देगा जिसका हमारे सामाजिक संस्कृति पर विपरीत प्रभाव होगा।" (उपाध्याय, राष्ट्र चिंतन)।

इसके अलावा उपाध्याय जी मशीनीकरण के न तो समर्थक थे और न ही विरोधी। वे मशीनों को समाज और अर्थव्यवस्था पर हावी नहीं होने देना चाहते थे। बड़े उद्योगों पर आधारित अर्थव्यवस्था को वे भारतीय परिस्थिति में उचित नहीं मानते थे क्योंकि" ये उद्योग उत्पादन के केंद्रीकरण के साथ मांग और आपूर्ति पर यंत्रवाद हावी हो जाने के कारण तानाशाही प्रवृत्ति वाले तथा अमानवीय हो जाते हैं। इनसे समाज में शक्ति के केंद्रीकरण और विषमता की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।"(उपाध्याय, राष्ट्र चिंतन)। वे उद्योगों में समुचित विविधता लाना चाहते थे। इस मामले में उनका दृढ़ मत था कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित ऐसे उद्योग स्थापित किए जाएं जिसमे स्वदेशी शिल्प विज्ञान के प्रयोग के साथ विकेंद्रीकरण पर अधिक जोर देते हुए गांव के प्रत्येक घर को उत्पादन का केंद्र बनाया जाय। अपनी पुस्तक 'भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा 'में विकेंद्रीकरण और आत्मनिर्भरता की वकालत करते हुए कहा है कि "यह भी आवश्यक है कि हम आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनें। यदि हमारे कार्यक्रमों की पूर्ति विदेशी सहायता पर निर्भर रही तो यह अवश्य ही हमारे ऊपर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से बंधनकारी होगी। हम सहायता देने वालों के प्रभाव में आ जाएंगे। अपनी आर्थिक योजनाओं की सफलता में इन संभव बाधाओं को बचाने की दृष्टि से हमें अनेक स्थानों पर मौन धारण करना होगा।" इसके आगे वे और गंभीर बात करते हैं "जो राष्ट्र दूसरों पर निर्भर रहने की आदत डाल लेता है उसका स्वाभिमान नष्ट हो जाता हैऔर ऐसा स्वाभिमान शून्य राष्ट्र कभी अपनी स्वतंत्रता की कीमत नहीं आंक सकता है।"

देश को स्वावलंबी बनाने के लिए उन्होंने बड़े पैमाने के उद्योगों के बजाय छोटे और कुटीर उद्योगों के विकास पर जोर देते हुए पांचजन्य में लिखा "औद्योगिक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने, जनता को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने तथा संपत्ति के सम

विभाजन की व्यवस्था करने के लिए हमें कुटीर उद्योगों को पुन: विकसित करना होगा। प्राचीन भारत में सम्पूर्ण आर्थिक ढांचा इन कुटीर उद्योगों पर ही खड़ा था। उस समय न सिर्फ देश बल्कि उसकी सूक्ष्म इकाई गांव तक स्वावलंबी थे। आर्थिक स्वतंत्रता के लिए हमें इस रीढ़ को पुन: खड़ा करना होगा।" पंडित उपाध्याय जी कुटीर उद्योगों को पुरानी पद्धति से नहीं बल्कि आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति को ध्यान में रखते हुए उसे आगे बढ़ाना चाहते थे। उनके अनुसार " हमे यह स्वीकार करना होगा कि मशीनीकरण भारत की आर्थिक प्रगति का माध्यम नहीं है। बल्कि कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थनीति का आधार मानकर विकेंद्रित अर्थव्यवस्था का विकास करने से ही देश की आर्थिक प्रगति संभव है।"(पांचजन्य,1995)। विकेंद्रित अर्थव्यवस्था के पक्ष में पंडित उपाध्याय ने महात्मा गांधी को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "मैं विशाल उत्पादन चाहता हूं लेकिन विशाल जन समूह द्वारा।'(उपाध्याय बौद्धिक वर्ग पंजिका। उनका स्पष्ट मानना था कि "यह भारत ही है जो संसार को विकेंद्रित अर्थव्यवस्था दे सकता है।और सच्चे लोकतंत्र का आधार आर्थिक विकेंद्रीकरण ही हो सकता है।"(एकात्म मानवदर्शन)। विकेंद्रीकरण से ही हम सामाजिक न्याय, स्वदेशी और स्वावलंबन को प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि 'स्वदेशो भुवनम् त्रयम्' जिसका अर्थ है कि अपना देश ही हमारे लिए सब कुछ है, तीनों लोकों के बराबर है। पंडित उपाध्याय का भी मानना था कि एक मजबूत राष्ट्र ही विश्व को योगदान दे सकता है और तभी हम एकात्म मानव दर्शन को सार्थक कर पाएंगे। उनकी यही संकल्पना ही आत्मनिर्भर भारत की मूल अवधारणा है। उनका सपना भारत को विश्व गुरु के रूप में विश्व का नेतृत्व करते हुए देखने का था। उनके विचार स्वभाव में स्वदेशी और कार्यान्वयन में स्थानीय थे। उन्होंने समावेशी विकास का मॉडल दिया जिसमे अंतिम व्यक्ति को शामिल किया गया।

आत्म निर्भरता और आत्मनिर्भर भारत का मूलमंत्र - पंडित दीन दयाल उपाध्याय के इन्हीं आर्थिक विचारों से प्रेरित होकर भारत सरकार ने देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों की शुरुआत की है। आज भारत आत्म निर्भर भारत अभियान के अंतर्गत 'लोकल के लिए वोकल' के मूलमंत्र के साथ उनके दृष्टिकोण को साकार कर रहा है। भारत के प्रधानमंत्री ने मई 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा करते हुए अपने संबोधन में आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु पांच स्तंभों का जिक्र किया। जो इस प्रकार है।

1–अर्थव्यवस्था यानी क्वांटम जंप जो वृद्धिशील परिवर्तन नहीं बल्कि लंबी छलांग सुनिश्चित करे.

2–इन्फ्रास्ट्रक्चर यानी बुनियादी ढांचा जिसे भारत की पहचान बन जाना चाहिए.

3–टेक्नोलॉजी ड्रिवेन सिस्टम अर्थात तकनीक संचालित तंत्र जो 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओं पर आधारित हो.

4– वाइब्रेंट डेमोग्राफी यानी जीवंत जनसांख्यिकी जो आत्म निर्भर भारत के लिए हमारी ऊर्जा का स्रोत है।

5–डिमांड अर्थात मांग जिसके तहत हमारी मांग और आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) की ताकत का उपयोग पूर्ण क्षमता के साथ किया जाना चाहिए।

अब इसी बुनियाद पर आत्मनिर्भर भारत की इमारत तैयार करने की दिशा में सरकार कदम बढ़ा रही है। इस हेतु घोषित आर्थिक पैकेज में बड़े उद्योगों के बजाय किसान, श्रमिक तथा छोटे और मझोले व्यापारियों को लाभार्थी समूह में शामिल किया गया है। जैसा कि प्रधानमंत्री जी ने भी 12 मई 2020 को अपने संबोधन में कहा कि आज विश्व में आत्मनिर्भर शब्द के मायने पूरी तरह से बदल गए हैं। अर्थकेंद्रित वैश्वीकरण बनाम मानव केन्द्रित वैश्वीकरण की चर्चा जोरों पर है। विश्व के सामने भारत का मूलभूत चिंतन आशा की किरण के रूप में नजर आता है। भारत की संस्कृति और भारत के संस्कार उस आत्मनिर्भरता की बात करते हैं जिसकी आत्मा वसुधैव कुटुंबकम् की है यानी विश्व एक परिवार है। भारत की आत्मनिर्भरता में संसार के सुख, सहयोग और शांति की चिंता होती है।इसके अलावा प्रधानमंत्री ने स्थानीय वस्तुओं की

महत्ता को समझाते हुए लोकल उत्पाद खरीदने और उसके प्रचार प्रसार का आह्वान किया है। ये सब तभी संभव होगा जब व्यवस्था का अधिक से अधिक विकेंद्रीकरण होगा ।आर्थिक विकेंद्रीकरण की चर्चा होने पर मानसपटल पर पंडित उपाध्याय का नाम आना स्वाभाविक है। जन संघ की स्थापना से ही उसकी नीतियों में स्वदेशी, स्वावलंबन, भूमि व्यवस्था में परिवर्तन, आम जन को स्वावलंबी बनाने के लिए कुटीर उद्योग, श्रम का अधिकार, संयमित उपभोग और कृषि उत्पादन इत्यादि विषयों को शामिल किया गया। ये सब नीतियां भारत की तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल और देश के सामने खड़ी चुनौतियों से निपटने हेतु कारगर थी। साठ के दशक में पंडित उपाध्याय द्वारा हमारे अर्थतंत्र को मजबूत बनाने हेतु दिए गए विचार आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक नजर आ रहे हैं। आज भारत कृषि और खाद्यान्न के साथ साथ रक्षा मामलों में भी आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है। हाल में विश्व को अपनी चपेट में लेने वाली विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 (कोरोना)ने भारत को और अधिक तेजी से आत्मनिर्भर बनाने हेतु परिस्थितियां उत्पन्न कर दिया। इस महामारी से उत्पन चुनौतियों से यह अनुभव किया गया कि जो आपका है सिर्फ वही आपका है, बाकी सब मिथ्या है। इसी तथ्य ने 'राष्ट्र प्रथम सदैव प्रथम' के विचार को अंत:स्थल में गहरी पैठ बनाने का अवसर प्रदान किया और स्थानीय उत्पादों तथा उनसे संबंधित भारतीय बाजारों को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की है। प्रधानमंत्री जी के आह्वान के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान ने स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बनाने और उसके साथ ही 'स्वदेशी संग उत्सव 'द्वारा लोक जीवन में एक नए आयाम को विकसित करने में सफलता प्राप्त की है।इस बीमारी से बचने हेतु सोशल डिस्टेंसिंग ने भुगतान प्रणाली को कैश मोड से डिजिटल मोड में ला दिया। नवंबर 2016 में विमुद्रीकरण के दौर में डिजिटल भुगतान पर सवाल उठाते लोगों ने कोरोना काल में इसका खुलकर प्रयोग शुरू किया। आज ये भुगतान प्रणाली नगद भुगतान में होने वाली कई प्रकार की गड़बड़ियों को दूर कर दूर दराज में बैठे लोगों को समय पर पूरी धनराशि मुहैया करा रही है। अंतिम लाभार्थी तक पहुंचने के लिए पंडित उपाध्याय के दृष्टिकोण का पालन करते हुए भारत सरकार ने उन सभी के वित्तीय समावेशन के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डी बी टी) योजना की शुरुआत की है। अस्सी के दशक में जहां एक पूर्व प्रधानमंत्री ने यहां तक स्वीकार किया कि दिल्ली से चले प्रति एक रुपए में केवल पन्द्रह पैसा ही गांव तक पहुंचता है लेकिन इस डी बी टी योजना से लाभार्थियों के हांथ में सहायता की पूरी धनराशि पहुंचने लगी है। पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रवर्तित स्वदेशी विकास सिद्धांत का पालन करते हुए भारत सरकार ने सितंबर 2014 में मेक इन इंडिया कार्यक्रम प्रारंभ किया जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को सेवा आधारित अर्थव्यवस्था से विनिर्माण हब के रूप में परिवर्तित कर दिया है। आज भारत अधिकांश रक्षा हथियारों का आयात करने के बजाय स्वदेश में ही उसका निर्माण करने के साथ रक्षा गलियारे (डिफेंस कोरिडोर) का निर्माण भी कर रहा है। इससे देश की न केवल बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है बल्कि देश में ही रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। इससे हम न केवल घरेलू तौर पर आत्मनिर्भर हो रहे हैं बल्कि विकास का लाभ ग्रामीणों, किसानों, श्रमिकों और मध्यम वर्ग के जीवन में सुधार कर रहा है। यही नहीं भारत सरकार की सन् 2016 से प्रारंभ स्टार्ट अप योजना और स्टैंडअप योजना देश में जहां उद्यमशीलता का विकास कर लोगों को नौकरी मांगने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बना रही है वहीं उज्जवला योजना, जनधन योजना, किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, और हर घर में शौचालय योजना तथा हर गरीब को घर एवं बुनियादी ढांचे का विकास देश को नई दिशा में ले जाकर पंडित उपाध्याय के सपनो को साकार कर रहा है। आज भारत सरकार की विकास यात्रा के केंद्र में 'सबका साथ सबका विकास' की मूलभावना के प्रेरणा स्त्रोत के रूप में पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार ही नजर आते हैं।

निष्कर्ष - पंडित दीन दयाल उपाध्याय का चिंतन शाश्वत विचारधारा से ओत-प्रोत है। इसके आधार पर उन्होंने राष्ट्रवाद को समझने का प्रयास करते हुए देश की समस्याओं पर चिंतन किया। राजनीति का प्रश्न हो या अर्थव्यवस्था का, मानव

जीवन से जुड़े सभी प्रश्नों की समाधानयुक्त व्याख्या उनके वैचारिक लेखों में स्पष्ट दिखाई देती है। श्वास-प्रश्वास के असंतुलन की तरह उन्होंने अर्थ के अभाव और प्रभाव दोनों को हानिकारक बताते हुए कहा कि जिस प्रकार दरिद्रता हानिकारक है, उसी प्रकार धनलोलुपता भी। हमको आर्थिक समृद्धि के लिए ऐसे कार्यक्रम स्वीकार करने होंगे जो न केवल हमारे द्वारा अंगीकृत लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुकूल हों बल्कि हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के भी अनुकूल हों क्योंकि संस्कृति को गवांकर अर्थार्जन करना निरर्थक ही नहीं, विनाशकारी भी होगा। उन्होंने बड़े प्रयासों के बाद हासिल की गई राजनीतिक स्वतंत्रता की रक्षा हेतु सैन्य सामर्थ्य में आत्मनिर्भरता की पुरजोर वकालत की और इसके लिए स्वाभिमान की रक्षा को आवश्यक बताया और स्वाभिमान की रक्षा हेतु आर्थिक आत्मनिर्भरता को आवश्यक बताया और कहा कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी साधनों पर निर्भर योजना का निर्माण आवश्यक है। इस हेतु भारत सरकार द्वारा संचालित हालिया कार्यक्रम और योजनाएं पंडित उपाध्याय जी के आर्थिक विचारों से ओत प्रोत नजर आते हैं। इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि पंडित उपाध्याय जी का आर्थिक चिंतन जितना समीचीन उस समय था उतना ही प्रासंगिक आज भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुलकर्णी, शरत अनंत, (2014): पंडित दीन दयाल उपाध्याय : विचार दर्शन, खंड चार, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज 14.
2. उपाध्याय, दीन दयाल (1958) : भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा। राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन लखनऊ, पेज 04।
3. वही, पेज 90.
4. उपाध्याय, दीन दयाल : राष्ट्र चिंतन। लोक हित प्रकाशन लखनऊ, पेज 82-83
5. वही, पेज 118.
6. पांचजन्य, 25 जनवरी 1954.
7. उपाध्याय, दीन दयाल (1967): बौद्धिक वर्ग पंजिका, 25 जुलाई 1967, क्रम 30, पेज 02.
8. नेने, विनायक वासुदेव (1991): एकात्म मानवदर्शन : पंडित दीन दयाल उपाध्याय विचार दर्शन। खंड दो सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज 64.
9. पांचजन्य, 12 दिसंबर 1995, पेज 11.
10. योजना, दिसंबर 2021, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।